



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 174]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 28, 2006/श्रावण 6, 1928

No. 174]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 28, 2006/SRAVANA 6, 1928

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 जुलाई, 2006

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन गण. मूल के या वहां से निर्यातित सैलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म (सीटीएफ) के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम

सं. 14/7/2005-डीजीएडी.—प्रक्रिया :

1. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत चीन जनवादी गणराज्य (जिसे एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सैलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म (जिसे एतदपश्चात सीटीएफ या संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत के बारे में दिनांक 27 सितंबर, 2005 को एक सार्वजनिक नोटिस (जांच शुरुआत अधिसूचना) की घोषणा की, जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया। घरेलू उद्योग की ओर से, जो उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात प्रदर्शित करते हैं, मैसर्स केसोराम रेयॉन, मैसर्स केसोराम इंडस्ट्रीज की इकाई, कोलकाता (जिसे एतदपश्चात याचिकाकर्ता कहा गया है) से प्राप्त याचिका के बाद पाटनरोधी प्रक्रिया शुरू की गई थी। याचिका में उपर्युक्त उत्पाद के पाटन के साक्ष्य एवं उससे हुई क्षति का ब्यौरा दिया गया था, जिसे प्रक्रिया की शुरुआत हेतु पर्याप्त औचित्य समझा गया।
- (ii) शुरुआत से पहले ऊपर उल्लिखित नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा जांच की कार्यवाई शुरू करने से पहले भारत स्थित चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को याचिकाकर्ता से पूर्णतः प्रलेखित आवेदन प्राप्त होने के बारे में सूचित किया गया।

- (iii) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (2) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा उक्त सार्वजनिक सूचना की एक प्रति ज्ञात निर्यातक उत्पादकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों, संबंधित देश के दूतावास और याचिकाकर्ता को प्रेषित की गई और उन्हें अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया ।
- (iv) ऊपर उल्लिखित नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा आवेदन की एक प्रति सभी ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और भारत स्थित चीन जन.गण. के दूतावास को उपलब्ध कराई गई । उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (4) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा संगत प्रश्नावली की एक-एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित चीन जन.गण. के दूतावास एवं अन्य हितबद्ध पक्षों को भी उपलब्ध कराई गई । चीन जन.गण. के दूतावास से भी उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समयावधि के भीतर भेजने की सलाह देने का अनुरोध किया गया ।
- (v) प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगने के लिए चीन जन.गण. के निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी :-
1. शांगयू सेलोफेन कं. लि.  
दासांजियाओ डेवलपमेंट जोन,  
शांगयू सिटी, झिजियांग प्रोविंस,  
चीन जिप-312300
  2. यूआओ पेपर मिल  
नं. 328 जियांग-युआन स्ट्रीट,  
युआओ सिटी, झिजियांग,  
चीन-जिप-315400
  3. वेइफांग हेंगलियान सेलोफेन कं. लि.  
409, वालोंग ईस्ट स्ट्रीट,  
वेइफांग, शांगडोंग,  
चीन-जिप-261031
- (vi) उपरोक्त अधिसूचना के प्रत्युत्तर में किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का प्रत्युत्तर नहीं दिया ।

- (vii) आयातक प्रश्नावलियों के साथ जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रति आवेदन में सूचीबद्ध विभिन्न आयातकों को भी भेजी गई थी और उनसे नियम 6(2) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर संगत सूचना प्राधिकारी को उपलब्ध कराने तथा अपने विचारों से लिखित में अवगत कराने के लिए कहा गया था । मैसर्स गुलशन राय जैन एंड सन्स और मैसर्स मुकेश पेपर मार्ट ने निर्धारित प्रपत्र में सूचना के साथ जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में अपने अनुरोध प्रस्तुत किए थे । मैसर्स ज्योति कोष्टर्स प्रा.लि. ने भी कुछ तर्क दिए थे किन्तु निर्धारित प्रपत्र में सूचना उपलब्ध नहीं कराई थी ।
- (viii) प्राधिकारी ने 3 फरवरी, 2006 की अधिसूचना द्वारा अंतिम जांच-परिणाम अधिसूचित किए तथा हितबद्ध पार्टियों से अनुरोध किया कि वे इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं । मैसर्स गुलशन राय जैन एंड संस तथा मैसर्स मुकेश पेपर मार्ट ने अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की थीं ।
- (ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतर को उसके द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के जरिए उपलब्ध कराया और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- (x) प्राधिकारी ने मौखिक रूप से संगत सूचना प्रस्तुत करने हेतु हितबद्ध पार्टियों को अवसर प्रदान करने के लिए 23 मार्च, 2006 को सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधि तथा अन्य हितबद्ध पार्टियां उपस्थित हुई थीं । सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित होने वाली पार्टियों से मौखिक रूप में व्यक्त विचारों और सूचना को लिखित में प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था । हितबद्ध पार्टियों को अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा मौखिक रूप से प्रस्तुत विचारों/सूचना के संबंध में खण्डनकारी तर्क प्रस्तुत करने की अनुमति दी गई थी । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों से प्राप्त लिखित अनुरोधों पर विचार किया है । प्रारंभिक जांच परिणामों की घोषणा से पूर्व विभिन्न पार्टियों द्वारा दिए गए उन तर्कों को संक्षिप्तता की वजह से इसमें दोहराया नहीं गया है जिन्हें पूर्व में अधिसूचित प्रारंभिक जांच-परिणामों में प्रकाशित किया गया है । प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापन किया है । आवेदक से क्षति से संबंधित अतिरिक्त ब्यौरे मांगे गए थे जो प्राप्त भी हो गए थे ।

- (xi) इस अधिसूचना में \*\*\*\* पर व्यक्त जानकारी याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी को व्यक्त करती है और प्राधिकारी द्वारा उक्त नियमावली के तहत उसी पर विचार किया गया है । उपर्युक्त नियमों के नियम 16 के अनुसरण में इन जांच-परिणामों के विचारार्थ आवश्यक तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पक्षों को प्रकट कर दिया था और इस पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी नीचे विचार किया गया है । पाटन तथा क्षति की जांच में 1 अप्रैल, 2004 से 31 मार्च, 2005 की अवधि (जिसे जांच अवधि अथवा पीओआई भी कहा जाता है) शामिल की गई है । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच अवधि में 1 अप्रैल, 2001 वार्षिक से जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि शामिल है (इसे क्षति अवधि भी कहा गया है)
- (xii) प्राधिकारी ने पाटन तथा परिणामकारी क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी प्रकार की जानकारी जो आवश्यक समझी गई, को प्राप्त करके सत्यापन किया । प्राधिकारी को जांच के दौरान विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत सूचना की यथार्थता के बारे में संतुष्टि हुई जिस पर यह जांच परिणाम आधारित है । इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की । याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की यथोचित उत्पादन लागत का विश्लेषण किया गया है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (xiii) प्राधिकारी ने पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध से संबंधित जांच से संगत मानी गई सूचना प्रस्तुत करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के प्रयोक्ताओं और ज्ञात प्रतिनिधि संगठनों को अवसर प्रदान किया । जांच शुरुआत संबंधी नोटिस की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सीआईआई, एसोचैम आदि को भी भेजी गई थी ।
- (xiv) जहां तक किसी हितबद्ध पार्टी ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया या उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ये जांच परिणाम दर्ज किए हैं ।
- (xv) गोपनीय आधार पर हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत सूचना गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के बारे में जांची गई थी । संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने अपेक्षा अनुसार गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है और

उसे अन्य हितबद्ध पार्टियों के समक्ष प्रकट नहीं किया गया है । जहां तक संभव हुआ है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाली पार्टियों को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।

### विचाराधीन उत्पाद:

2. विचाराधीन उत्पाद सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म है जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर के नाम से भी जाना जाता है जो चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित हो । ट्रांसपेरेंट फिल्म ग्लास क्लियर ट्रांसपेरेंसी और स्पर्कल की रिजनरेटिड सेलुलोज फिल्म होती है । यह लोचशील होती है लेकिन सख्त होती है और किसी ऑटोमेटिक पैकेजिंग प्रचालन में यह सभी चोटों को सह सकती है और यह आउटस्टैंडिंग मशीन सामर्थ्य और डाइमेंशनल स्थायित्व दर्शाती है । इसे लकड़ी की लुग्दी से बनाया जाता है, अतः यह नॉन-टाक्सिक तथा बायोडिग्रेडेबल होती है । टीपी फिल्मों को रंगीन अथवा सफेद बनाया जा सकता है । ट्रांसपेरेंट फिल्म शीट तथा रोल रूपों में उपलब्ध होती है । इस समय अनेक ग्रेडों वाली टीपी फिल्मों की विभिन्न किस्मों का उत्पादन किया जाता है । यह एक आदर्श पैकेजिंग सामग्री होती है ।

टीपी फिल्में प्लास्टिक श्रेणी तथा उसकी वस्तुओं के रूप में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 39, उपशीर्ष 392071 के तहत वर्गीकृत है । किंतु, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और उनकी जांच के दायरे पर कोई बाध्यता नहीं है ।

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि इस उत्पाद के अलग-अलग विवरण और सीमाशुल्क वर्गीकरण होने की सूचना दी गई है । याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि अनन्य सीमाशुल्क वर्गीकरण की अनदेखी करने और असंगत सीमा शुल्क वर्गीकरण का उपयोग करने के लिए आयातकों की ओर से जानबूझकर यह कार्य किया गया है । याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से इस पहलू की विस्तृत जांच करने का अनुरोध किया है कि यथा समय किसी संभावित उल्लंघन से बचने के लिए इस पहलू का उल्लेख निष्कर्षों तथा शुल्क तालिका में स्पष्ट रूप से किया जाए । याचिकाकर्ता ने यह भी आरोप लगाया है कि यह अजीब सहयोग है कि दो अलग-अलग सीमाशुल्क वर्गीकरण के तहत विचाराधीन उत्पाद का आयात जिस कीमत पर किया जा रहा है उसमें भी भारी अंतर है ।

4. जांच के बाद प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वस्तुतः अनेक आयातकों के पास विचाराधीन उत्पाद के लिए निर्दिष्ट वर्गीकरण नहीं है और उक्त वस्तु का आयात विचाराधीन उत्पाद पर लागू होने वाली सीमा शुल्क वर्गीकरण से भिन्न वर्गीकरण के तहत किया गया है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के तहत यथा वर्गीकृत सेल्यूलोज फिल्म का विवरण अत्यंत स्पष्ट है और इस बात की कोई गुंजाइश नहीं रहती है कि विचाराधीन उत्पाद केवल 392071 के अंतर्गत ही आता है। तथापि, वस्तु का भारी मात्रा में आयात सीमा शुल्क वर्गीकरण 48064090 के तहत किया गया है।
5. सुनवाई के समय प्रतिवादी आयातकों ने यह तर्क दिया कि घरेलू उद्योग द्वारा 30 ग्राम प्रति वर्ग मी. (जीएसएम) से कम की सीटीएफ का उत्पादन नहीं किया जाता है। तथापि, लिखित अनुरोधों में उन्होंने यह तर्क देने के लिए संशोधन किया कि घरेलू उद्योग द्वारा 25 ग्राम प्रति वर्ग मी. (जीएसएम) से कम की सीटीएफ का उत्पादन नहीं किया जाता है। याचिकाकर्ता कंपनी की वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना पर भी विश्वास नहीं किया गया था। आगे यह तर्क दिया गया था कि 25 ग्राम/प्रति वर्ग मी. तक की सीटीएफ 25 ग्राम/वर्ग मी. से अधिक की सीटीएफ से पूर्णतः भिन्न है। आयातित सीटीएफ के लिए उपभोक्ताओं की सूची पर विश्वास करते हुए आयातकों ने यह तर्क दिया है कि इनमें से कोई भी प्रयोक्ता स्वदेशी सीटीएफ का उपभोक्ता नहीं है। आगे यह भी तर्क दिया गया है कि 25 ग्राम/वर्ग मी. से कम और अधिक सीटीएफ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप में प्रतिस्थापनीय नहीं है और यदि सीटीएफ महंगा होता है तो प्रयोक्ता कोई अन्य विकल्पित प्रतिस्थापन ढूँढ लेंगे। अतः इस बात का कोई साक्ष्य नहीं उपलब्ध हुआ है कि 25 ग्राम/वर्ग मी. से कम या ज्यादा वाले सीटीएफ उत्पाद भिन्न-भिन्न उत्पाद हैं।
6. घरेलू उद्योग ने सुनवाई के समय यह प्रतिवाद किया था कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन का अधिकांश भाग 30 ग्राम/वर्ग मी. से कम सीटीएफ का संघटक है। जांच अवधि के दौरान जीएसएम-वार उत्पादन को दर्शाने वाला एक विवरण भी प्रदान किया गया था। घरेलू उद्योग ने उत्पादन के जीएसएम के रूप में अपने उत्पादन के जांच अवधि के दौरान माह-वार ब्योरे लागत लेखाकार द्वारा उचित रूप से सत्यापित कराकर उपलब्ध कराए थे। आवेदन की उत्पादन प्रक्रिया तथा अपेक्षित जीएसएम के साथ सीटीएफ के उत्पादन की स्थिति निर्मित करने वाले मानदंडों की ब्योरेवार जांच की गई थी। याचिकाकर्ता कंपनी के उत्पादन रिकार्ड जो भिन्न जीएसएम सीटीएफ का उत्पादन दर्शाते हैं की भी जांच की गई। यह नोट किया जाता है कि भिन्न जीएसएम के साथ सीटीएफ का उत्पादन पुनः उत्पादन के स्तर पर कॉस्टिंग हेड के दो हिस्सों के जरिए अपेक्षित डोजिंग के विस्कोस को पास करके प्राप्त किया जाता है। उत्पादन सुविधाओं के रूप में,

यह प्रेक्षित किया गया था कि समान उत्पादन सुविधाएं भिन्न जीएसएम के साथ सीटीएफ के उत्पादन के लिए लागू की गई थी। केवल कॉस्टिंग हेड तथा विस्कोस की डोजिंग को, अपेक्षित जीएसएम सीटीएफ के उत्पादन की प्राप्ति की दृष्टि से नियंत्रित किया जाना अपेक्षित है।

7. आयातकों के तर्कों के प्रत्युत्तर में घरेलू उद्योग ने यह दलील दी थी कि (क) इन आधारों पर किए गए तर्क बिना साक्ष्य के अयथार्थ कथन मात्र हैं; (ख) आयातक अपने तर्क बदलते रहे थे; (ग) भिन्न जीएसएम का उत्पादन, उत्पादन प्रक्रिया पर नियंत्रण के अधीन है; (घ) घरेलू उद्योग के उत्पादन का अधिकांश भाग 25 जीएसएम है; (ङ) आयातित उत्पाद का जीएसएम निर्धारित नहीं हुआ है न ही बीजक पर जीएसएम का उल्लेख घरेलू उद्योग अथवा चीनी उत्पादकों द्वारा किया गया है; (च) यदि जीएसएम कमतर है तो उत्पादन की संबद्ध लागत उच्चतर होगी जबकि घरेलू उद्योग का आरोप आयातित उत्पादों की कमतर कीमतों के विरुद्ध प्रभावी रूप से है जो कि कमतर जीएसएम ग्रेड आयातों के आरोपों से और गहन हो जाता है; (छ) आयातकों ने अंतः परिवर्तनीय रूप से आयातित उत्पाद के कमतर जीएसएम, आयातित उत्पाद की खराब गुणवत्ता तथा स्टॉक लॉट के आयात के बारे में तर्क दिए हैं।

8. प्रकटन विवरण में अपनी टिप्पणियों में उत्तरदाता आयातकों ने यह दोहराया है कि विचाराधीन उत्पाद को प्लेन/अनकोटेड सेलोफेन पारदर्शी फिल्म 25 जीएसएम से 40 जीएसएम तक प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। उत्तरदाता आयातक ने अपने इस दावे को दोहराया है कि :

- (क) आयातित उत्पाद घटिया गुणवत्ता के थे।
- (ख) केवल ग्रेड-III सामग्री का चीन से आयात किया गया था।
- (ग) आयातित उत्पाद, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद से भिन्न है।

9. प्राधिकारी ने जांच के दौरान इन दलीलों की ब्यौरेवार जांच की। प्राधिकारी मानते हैं कि केवल गुणवत्ता में अंतर, आयातित उत्पाद को घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा बिक्री किए गए उत्पाद से भिन्न नहीं ठहराता। प्राधिकारी यह मानते हैं कि विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों, रिकार्डों में उल्लिखित साक्ष्यों और याचिकाकर्ता के परिसर में की गई जांच को ध्यान में रखते हुए कि जीएसएम का उत्पादन उत्पादन प्रक्रिया में नियंत्रण का मामला है और इसे प्रक्रिया मानदंडों तथा विस्कोस पर नियंत्रण करके प्राप्त किया जा सकता है। यह भी नोट किया गया है कि हितबद्ध पक्षकार यह साबित नहीं कर

सके हैं कि 25 जीएसएम से कम अथवा ज्यादा सीटीएफ अलग-अलग उत्पाद हैं ।

10. याचिकाकर्ता कंपनी की वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना के संदर्भ में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने लम्बी अवधि से वेबसाइट अद्यतन न किए जाने की पुष्टि की थी । किसी भी घटना में कंपनी द्वारा रखे गए रिकार्डों से सत्यापित साक्ष्य से यह साबित होता है कि वेबसाइट पर दी गई सूचना वस्तुतः ठीक नहीं है ।

तदनुसार, प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों में रखे गए विचाराधीन उत्पाद की गुजाइश की पूर्ति करते हैं अर्थात् उत्पाद विचाराधीन उत्पाद सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म है जिसे ट्रांसपेरेंट पेपर के नाम से भी जाना जाता है और जो चीन जनवादी गणराज्य के मूल की अथवा वहां से निर्यातित है ।

#### समान वस्तु:

11. जहां तक समान वस्तु का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि समान वस्तु की परिभाषा से संबंधित नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का अभिप्राय किसी ऐसी वस्तु से है जो जांचाधीन वस्तु के सभी पहलुओं में "समान" अथवा अभिन्न है अथवा ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य ऐसी वस्तु जिसके गुण जांचाधीन वस्तु के साथ अत्यधिक अत्यधिक मिलते हों ! यह साबित करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु के समान है तकनीकी विनिर्दिष्टताओं, विनिर्माण प्रक्रिया कार्य तथा प्रयोग और टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं पर प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है । जांच के आधार पर यह नोट किया गया था कि प्रारंभिक जांच परिणामों में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की विशेषताएं संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के समान हैं ।
12. उत्तरदाता आयातकों ने यह दावा किया किया था कि (क) उनके द्वारा आयातित वस्तुएं घटिया गुणवत्ता की हैं (ख) और वे एक अलग उत्पाद का प्रतिनिधित्व करते हैं जो घरेलू उद्योग द्वारा बेचे जाने वाले उत्पाद से भिन्न हैं (ग) सीपीएफटी की विभिन्न ग्रेडों वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता की मात्रा, मशीन द्वारा अथवा प्रचालनों के लिए प्रयोग किए जाने की योग्यता वस्तुतः वस्तु की उपयोगिता और अंतिम प्रयोक्ता मूल्य निर्धारण गुणवत्ता, ग्राहक और उत्पादक की अनुभूति, बाजार हिस्से में वितरण की प्रणालियों सहित अनेक मानदंडों से अत्यधिक अलग है । यह तर्क दिया गया था कि घरेलू उद्योग ने उत्पाद के लिए कार्यक्षम प्रतिस्थापक कीमत का



स्पष्ट रूप से निराकरण नहीं किया है और न ही प्रतिस्थापकों और उनके प्रतिस्थापन की मात्राओं के बारे में सूचना दी है। यह भी तर्क दिया गया था कि विभिन्न ग्रेडों के मौजूद होने का अर्थ यह है कि ग्राहक एक किस्म के बदले दूसरी किस्म नहीं ले सकता। यदि विभिन्न किस्मों परस्पर परिवर्तनीय होतीं तो ग्राहक महंगे ग्रेडों के बदले सस्ते ग्रेड प्राप्त करते। आयातक का यह भी तर्क है कि आयातित उत्पाद मशीनीकृत पैकिंग प्रचालनों के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता तथापि, प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि उत्तरदाता आयातकों ने अपने तर्कों के समर्थन में कोई तकनीकी अथवा वास्तविक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया।

13. आगे आवेदकों ने यह दावा किया था कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से आयातित वस्तु के समान है और आवेदकों द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई अधिक अंतर नहीं है और गुणवत्ता में मामूली से अंतर से आयातित और घरेलू उत्पाद में अंतर नहीं हो जाता है। याचिकाकर्ता ने प्रत्यक्षतः अथवा अपने डीलरों के जरिए ग्राहकों की उसी सामान्य श्रेणी के लिए उन व्यापारियों/पुनः विक्रेताओं के साथ प्रतिस्पर्धा की है। याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा पर्याप्त मात्रा में बिक्री पुनः विक्रेताओं के जरिए की गई है।
14. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न तर्कों की जांच की थी। प्राधिकारी यह समझते हैं कि गुणवत्ता में मामूली अंतर और यह तथ्य कि आयातित उत्पाद के अत्यधिक स्टॉक से घरेलू उत्पाद आयातित उत्पाद से अलग नहीं है। उत्पाद फिर भी सेलोफेन ट्रांसपेरेन्ट फिल्म रहता है क्योंकि उत्पाद में अनिवार्यतः वही मूल वस्तुगत और रासायनिक विशेषताएं हैं और एक ही कच्ची सामग्री से उत्पादन किया जाता है। एक ही प्रौद्योगिकी प्रयुक्त की जाती है, विनिर्माण प्रक्रिया वही है और एक जैसे कार्यों हेतु प्रयोग किया जाता है। ऐसा मामला होने पर यह नहीं कहा जा सकता कि गुणवत्ता में मामूली से अंतर से आयातकों द्वारा आयात किए गए उत्पाद, उत्पाद को सेलोफेन ट्रांसपेरेन्ट फिल्म जिसे ट्रांसपेरेन्ट पेपर भी कहा गया है से अलग माना जाए। यह भी नोट किया गया है कि गुणवत्ता में अंतर किसी उत्पादक सचेत व्यावसायिक निर्णय नहीं है। उत्पाद को उत्पाद में बोधगम्य गुणवत्ता अंतरों के आधार पर विभिन्न ग्रेडों में उत्पादन करने के पश्चात वर्गीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सीटीएफ अर्थ और नियमों में संबद्ध देश से आयातित सीटीएफ के समान वस्तु है।

**घरेलू उद्योग:**

- 15 आवेदन केसोराम रेयान (आवेदक) द्वारा दायर किया गया है जो समान वस्तु का एकमात्र उत्पादक है । आवेदन ने वर्तमान जांच से संबंधित सूचना प्रदान की है और वर्तमान जांच में भाग लिया है । यह विचारणीय उत्पाद का एकमात्र उत्पादक है । प्राधिकारी ने जांच के पश्चात यह निर्धारण किया है कि नियम 2(घ) के साथ, पठित नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है और इससे उपर्युक्त नियम के नियम 5(3)(क) के अनुसार याचिका दायर करने की सक्षमता को पूरा किया है ।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि यद्यपि विचाराधीन उत्पाद की कुछ किस्मों को अलग करने के लिए कुछ तर्क दिए गए हैं और घरेलू उत्पाद को आयातित उत्पाद से अलग कहा गया है अथवा विचाराधीन उत्पाद आवेदक के समस्त व्यवसाय में एक छोटा सा अनुपात है, इसलिए इसमें कोई विवाद नहीं है कि आवेदक भारत में संबंधित उत्पाद का एकमात्र उत्पादक है । जैसा कि पहले बताया गया है आवेदक उस वस्तु का उत्पादन करता है जो आयातक वस्तु के समान है । इसलिए प्राधिकारी पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए आवेदन दायर करने हेतु आवेदक की सक्षमता के बारे में प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं और यह मानते हैं कि आवेदक नियमों के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग है ।

**पाटन:****सामान्य मूल्य:**

16. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैरा 7 और 8 के अनुसार आवेदक ने यह दावा किया कि चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला माना जाना चाहिए और विस्तृत मूल्यांकन प्रक्रिया तथा नियमों में उल्लिखित जांच एक मूल्यांकन के बाद किसी देश ने चीन को गैर-बाजार वाले अर्थव्यवस्था वाले देश का दर्जा प्रदान किया है । याचिकाकर्ता ने यू.के. से भारत के लिए आयात कीमत तथा सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उचित बेंच मार्क पर विचार करने का भी प्रस्ताव है । प्रतिवादी आयातकों ने निम्नलिखित आधार पर यू.के. की कीमत पर एक उचित बेंच के रूप में विचार करने पर आपत्ति की (क) यू.के. में कीमतें अधिक हैं; (ख) यू.के. में कीमतें याचिका में प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार काफी अलग हैं; (ग) इंडोनेशिया, थाइलैंड, मलेशिया उचित प्रतिनिधि देश हैं (क्योंकि इन देशों में उत्पादन लागत कम है) । इसके उत्तर में घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया कि यू.के. में संभावित उच्चतर कीमतों की मौजूदगी किसी प्रतिनिधि देश के औचित्य

का संगत मापदंड नहीं है । वस्तुतः यूरोप और अमरीका को अन्य जांच प्राधिकारियों द्वारा चीन के उत्पादकों के लिए उचित प्रतिनिधि देश माना गया है ।

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिवादी आयातकों के इस दावे पर विचार नहीं किया जा सकता कि चीन को बाजार अर्थव्यवस्था वाला व्यवहार (एमईटी) प्रदान किया जाना चाहिए जिसका आधार यह है कि ऐसा एमईटी तभी प्रदान किया जा सकता है जब दावाकर्ता ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8 में सूचीबद्ध मापदंडों के अनुपालन की पुष्टि की हो । नियमों में यह प्रावधान है कि कोई पार्टी सहायपन योग्य सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर ही बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का दावा कर सकती है । प्राधिकारी ने वस्तुतः विगत में चीन की कंपनियों को ऐसा दर्जा प्रदान किया था । ऐसा दावा संबंधित चीन के उत्पादकों द्वारा अथवा उनकी ओर से किया जाना अपेक्षित है । तथापि, चीन के किसी भी उत्पादक ने ऐसा दावा नहीं किया है । प्रतिवादी आयातकों ने निर्धारित मानदंडों के अनुपालन की पुष्टि करने के लिए कोई सूचना तथा साक्ष्य भी प्रस्तुत नहीं किया है । अतः प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-8 के अनुसार चीन में संबद्ध वस्तु के किसी भी उत्पादक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं कर सकते ।
18. याचिकाकर्ता ने यू.के. से आयात की कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के अपने दावे की पूर्ति बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय और उचित लाभ को शामिल करने के लिए विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के अनुमान के साथ की है । भारत में सीमा शुल्क हेतु निविष्टि कीमतों के समायोजन के बाद उत्पादन लागत का अनुमान लगाया गया था । चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले मानने के बारे में घरेलू उद्योग के दायरे का खंडन करते समय हितबद्ध पार्टियों ने बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य के संबंध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है । इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि अंतिम जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ एक मात्र उपलब्ध विकल्प यह है कि उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत समायोजित भारत में समान वस्तु के लिए देय कीमत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाए । भारत में वास्तव में प्रदत्त कीमत पर इस वजह से विचार नहीं किया गया है कि वह पाटन के कारण कम हो गई थी । इस प्रकार प्राधिकारी ने कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत को प्रतिबिंबित करने की इष्टतम परिवर्तन लागतें, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्च तथा उचित लाभ को विधिवत समायोजित करके भारत में उत्पादन की लेखा लागत को ध्यान में रखते हुए परिकलित किया है । इस प्रकार सामान्य मूल्य \*\*\*\* रु./कि.ग्रा. निर्धारित किया गया है ।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चीन में किसी निर्यातक अथवा उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है । इसलिए, विभिन्न निर्यातकों के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया जा सकता । इसलिए, प्राधिकारी ने सभी चीनी उत्पादकों के लिए एक पाटन मार्जिन निर्धारित किया है ।

#### निर्यात कीमत:

19. याचिकाकर्ता ने डीजीसीआईएंड एस और आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सौदावार आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया । याचिकाकर्ता ने यह दावा किया था कि डीजीसीआईएंड एस के सौदावार आंकड़ों में भारत में हुए सभी निर्यात शामिल नहीं हैं क्योंकि ये आयात अनेक सीमाशुल्क वर्गीकरणों अर्थात् 39207111, 39207119, 39207129, 39209929 और 48064090 के अंतर्गत किए गए हैं । प्रतिवादी आयातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना से इस बात की पुष्टि होती है कि अध्याय 4806 के अंतर्गत भारी मात्रा में आयात हुआ है । इन सीमाशुल्क वर्गीकरणों में आयातों की अनुमति क्यों और कैसे दी गई इस प्रश्न पर नहीं जाते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि इन आयातों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर रखना अपेक्षित है । यह भी नोट किया जाता है कि प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद भी किसी निर्यातक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है ।

औसत आयात कीमत 25.84 रु. प्रति किग्रा. (0.57 अम.डा. प्रति किग्रा.) बनता है । अंतर्देशीय भाड़े, समुद्री बीमा कमीशन, समुद्री भाड़ा, बैंक प्रभारों एवं पत्तन प्रभारों के लिए कीमत समायोजनों पर विचार करने के बाद कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत \*\*\*\* रु. प्रति किग्रा. (\*\*\*\* अम.डा. प्रति किग्रा.) बनती है ।

#### पाटन मार्जिन:

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत में तुलना उचित तुलना होनी चाहिए । इसलिए प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत दोनों को कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित किया है । दोनों समान अवधि से संबंधित हैं । दोनों कीमतें करों से मुक्त हैं । प्राधिकारी यह मानते हैं कि की गई तुलना उचित तुलना है । उपर्युक्त के अनुसार निर्धारित सामान्य मूल्य एवं निर्यात-कीमत पर विचार करते हुए, पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जो 000 रु. प्रति कि.ग्रा. (000 अम.डा. प्रति किग्रा.) बनता है तथा जो निवल निर्यात कीमत का 300% बनता है ।

**क्षति एवं कारणात्मक संबंध:****21. घरेलू उद्योग के तर्क**

- (क) उत्पाद का पाटन लम्बे समय से किया जा रहा है और वस्तुतः ऐसा पूरी क्षति अवधि में किया गया है ।
- (ख) आयात मात्रा में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और ये काफी अधिक रहा है तथा इसमें समग्र रूप से, भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से वृद्धि हुई है । चीनी आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ा है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा घटा है ।
- (ग) पाटित आयातों से घरेलू कीमतों में भारी कटौती हो रही है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को बिक्री कीमत घटाने के लिए बाध्य होना पड़ा है और फिर भी उसने अपना बाजार हिस्सा गंवाया है । आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों पर ह्रासकारी प्रभाव पड़ा है ।
- (घ) उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है, इसके बावजूद लाभ की स्थिति खराब हुई है । इस प्रकार इससे पाटन के कारण प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित होता है । घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग इष्टतम स्तर से कम था ।
- (ङ) उत्पादन लागत कम होने पर भी लाभ घटे थे । परिणामस्वरूप नकद लाभ और निवेश पर आय में गिरावट आई है । नकद लाभ और निवेश पर आय में सकारात्मक से नकारात्मक तक कमी हुई । परिवर्तन लागतों में गिरावट के बावजूद लाभों में कमी हुई थी । ब्याज, मूल्यहास और करों से पूर्व लाभ तथा ब्याज और करों से पूर्व लाभ जो 2000-01 और 2001-02 में धनात्मक थे, 2003-04 और उसके बाद ऋणात्मक हो गए ।
- (च) वस्तु सूची में गिरावट निर्यातों के कारण हुई थी, जो बिक्री में मंदी के कारण बढ़ती हुई वस्तु सूची को देखते हुए किए गए थे ।
- (छ) कर्मचारियों की संख्या में गिरावट प्रदर्शित होती है । यद्यपि दी गई कुल मजदूरी बढ़ी है, तथापि उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी लागत में वृद्धि नहीं हुई है । यद्यपि उत्पादकता में सुधार हुआ है तथापि, लाभप्रदता की स्थिति खराब हुई है ।
- (ज) बिक्री मात्राओं, उत्पादन और मांग की दृष्टि से वृद्धि धनात्मक थी तथा बिक्री कीमत, बिक्री मूल्य, बाजार हिस्से, लाभ, नकदी प्रवाह, निवेश पर आय की दृष्टि से ये ऋणात्मक थी ।
- (i) निम्नलिखित से कारणात्मक संबंध सिद्ध होता है :-

- (i) लगातार कीमत कटौती से घरेलू उद्योग कीमतें कम करने को बाध्य हुआ है ।
- (ii) लाभ, नकदी प्रवाह और निवेशों पर आय की स्थिति कीमतों में कमी के कारण खराब हुई है ।
- (iii) चूंकि पाटित-आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है, इसलिए घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा घटा है ।
- (iv) बाजार हिस्से में गिरावट से घरेलू उद्योग अपना क्षमता उपयोग और इसके परिणामस्वरूप उत्पादन नहीं बढ़ा पाया ।

#### अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्क:

22. प्रतिवादी आयातकों ने इस बात को गलत ठहराया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है । आयातकों द्वारा प्रस्तुत तर्क और उन पर प्राधिकारी के विचार नीचे दिए गए हैं :-

- (i) घरेलू उद्योग को वैकल्पिक उत्पादों से क्षति हो रही है । यह दावा किया गया है कि संबद्ध वस्तुओं की मांग पिछले कुछ दशकों से कम हुई है । अनेक प्रतिस्थापनीय वस्तुएं पैकेजिंग पेपर के रूप में बाजार में आई हैं । इस तर्क के समर्थन में आयातक ने फरवरी, 2004 में प्रकाशित "फ्री डोनिया ग्रुप" के प्रकाशन का संदर्भ दिया है, जिसमें यह बताया गया है कि सेलोफेन फिल्म की मात्रा में ओरिएंटेड पेलीप्रोपिलीन से प्रतिस्पर्धा के कारण लगातार गिरावट होती रहेगी ।
- (ii) प्रतिवादी आयातक ने दावा किया है कि सेलोफेन फिल्म एक रंजक मद है और इसके वैश्विक उत्पादन एवं मांग में गिरावट आई है । आयातक ने इस संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त ग्लोबल इंडस्ट्री रिपोर्ट का हवाला भी दिया है ।
- (iii) आयातकों का दावा है कि चीन से आयात घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना नहीं है तथा भिन्न-भिन्न ग्रेड एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किए जा सकते हैं ।
- (iv) प्रकटन विवरण की अपनी टिप्पणियों में प्रतिवादी आयातकों ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :-
- (क) याचिकाकर्ता द्वारा दी गई सांख्यिकीय सूचना बिल्कुल गलत है और यह किसी बहु-उत्पाद कंपनी के पूरे समूह से संबंधित है ।
- (ख) बाजार हिस्से में गिरावट उस मामले में अप्रासंगिक है जबकि उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्रियां और निर्यात बिक्रियों में वृद्धि हुई है ।

(ग) याचिकाकर्ता कंपनी का संयंत्र पांच महीने से अधिक से बंद पड़ा हुआ था ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच:

23. प्रतिवादी आयातक द्वारा व्यक्त विचारों की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है और इन पर निम्नानुसार विचार किया गया है ।

आवेदक द्वारा उत्पादन बंद करने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता में उत्पादन के पुनः शुरू होने की पुष्टि की है और यह कहा है कि संयंत्र को ऐसे कारणों से बंद किया गया था जो उनके नियंत्रण से बाहर थे ।

गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि गुणवत्ता में अंतर इस बात का द्योतक नहीं है कि उत्पाद आयातित उत्पाद के समान उत्पाद नहीं है । इसके अलावा जैसा कि नोट किया गया है घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वास्तविक क्षति हुई है । यदि यह भी माना जाता है कि आयातित उत्पाद घटिया गुणवत्ता का था तब भी यह स्पष्ट है कि बाजार में पाटित आयातों के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है ।

व्यवहार्य स्थापनों के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वैकल्पिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा इस उद्योग के लिए नई बात नहीं है । आवेदक की वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि वैकल्पिक उत्पादन पिछले अनेक दशकों से विचाराधीन उत्पाद से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं । तथापि, यह नोट किया जाता है कि पिछले वर्षों में वैकल्पिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा के बावजूद घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन अच्छा रहा था । पाटित आयातों में वृद्धि के साथ तथा इन पाटित आयातों के परिणामस्वरूप हुई भारी कीमत कटौती के कारण क्षति अवधि के दौरान कार्य निष्पादन की स्थिति वास्तविक रूप से बिगड़ी है ।

प्राधिकारी मानते हैं कि इस उत्पाद को समाप्त होने वाला बताने वाली रिपोर्ट वर्तमान मामले के तथ्यों से संगत नहीं है । रिपोर्ट में वैश्विक मांग में भारी गिरावट दर्शाई गई है जबकि भारत में मांग में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है । इसके अलावा आवेदक पूर्व में लाभ कमा रहा था और अब उसे भारी वित्तीय घाटे उठाने पड़ रहे हैं और इसी दौरान आयातों में वृद्धि और भारी कीमत कटौती हुई है । यदि यह भी माना जाता है कि यह उत्पाद वैश्विक बाजार में समाप्त होने वाला उत्पाद है, तब भी भारतीय बाजार में इस उत्पाद की मांग बढ़ रही है । मांग में कमी घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की खराब स्थिति का प्रमुख कारण प्रतीत नहीं होता है ।

### आयात मात्रा और बाजार हिस्सा:

24. पाटित आयातों की मात्रा और विभिन्न देशों से आयातों में उनका हिस्सा और भारत में उनका उत्पादन और खपत निम्नानुसार है :-

आयात मात्रा (मी.टन)	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
चीन से	243	501	463	545
कुल आयात	383	830	673	729
आयातों में चीन का हिस्सा %	63.47	60.35	68.72	74.73
मांग/खपत (मी.टन)	2166	2663	2384	2670
भारत में मांग में चीन का हिस्सा %	11.24	18.80	19.41	20.40
उत्पादन (मी.टन)	1945	2156	2000	2456
घरेलू उत्पादन के संबंध में चीन से आयात (%)	12.49	23.22	23.14	22.18

प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- (क) अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में समग्र रूप से और भारत को आयातों, भारत में उत्पादन और भारत में खपत के संबंध में भी वृद्धि हुई थी ।
- (ख) भारत में विचाराधीन उत्पाद के कुल आयातों के संबंध में क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण. से आयातों में 63% से 75% तक की वृद्धि हुई थी ।
- (ग) भारत में उत्पादन के संबंध में चीन जन.गण. से आयातों में 12% (वर्ष 2001-02) से 22% (वर्ष 2004-05) की वृद्धि हुई थी ।
- (घ) मांग के संबंध में चीन जन.गण. से आयातों में क्षति अवधि के दौरान 11% से 20% तक की वृद्धि हुई थी ।

प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि चीन जन.गण. से विचाराधीन उत्पाद के आयातों में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में भी वृद्धि हुई थी ।



**आयातों का कीमत प्रभाव:**

25. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करें एवं शुल्कों, छूटों, बट्टों और कमीशनों और भाड़ों और परिवहन को शामिल न करते हुए बिक्री कीमत पर विचार करके किया गया है। आयातों की पहुंच कीमत का निर्धारण 1% दुलाई प्रभारों और लागू आधारभूत सीमाशुल्क के साथ भारत औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार करके किया गया है। विभिन्न कीमतों की प्रवृत्तियां नीचे तालिका में दी गई हैं :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
सीआईएफ निर्यात कीमत	रु./किग्रा.	41.80	48.83	24.65	25.84
आयातों की पहुंच कीमत	रु./किग्रा.	54.89	64.11	31.12	31.32
बिक्री वसूली (सूचीबद्ध)	सूचकांक	100	98	81	82
कीमत कटौती (सूचीबद्ध)	सूचकांक	100	138	162	165
उत्पादन लागत (सूचीबद्ध)	सूचकांक	100	95	97	96

उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि:

- (क) चीन से भारत को सीआईएफ निर्यात कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है।
- (ख) सीआईएफ आयात कीमत में गिरावट के परिणामस्वरूप चीन जन.गण से आयातों की पहुंच कीमत में भी काफी गिरावट आई है।
- (ग) चीन से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से अत्यधिक कम रही है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हुई है।
- (घ) आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास हो रहा है।

प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि चीन जन.गण. से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती हुई है और बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास हो रहा है।

### घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदंड:

26. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार क्षति के निर्धारण हेतु ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के तदनन्तर प्रभाव की एक उद्देश्यपरक जांच की जानी चाहिए। आगे नियमों में यह भी कहा गया है कि घरेलू उद्योग की चिंताओं पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का एक मूल्यांकन करना और उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संकेतकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा, इसमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्राप्ति या क्षमता का उपयोग : क्रीमियों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा: नकद प्रवाह समान, रोजगार, मजदूरी वृद्धि, पूंजीगत निवेश को बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।

### उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता और क्षमता उपयोग:

उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग की स्थिति निम्नानुसार है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
क्षमता (मी.टन)	3600	3600	3600	3600
उत्पादन (मी.टन)	1945	2156	2000	2456
संयंत्र क्षमता (%)	54.04	59.89	55.55	68.22
घरेलू बिक्री (मी.टन)	1783	1833	1711	1941
निर्यात बिक्री (मी.टन)	298	330	347	653
मांग (मी.टन)	2166	2663	2384	2670
मांग में बाजार हिस्सा (%)	82.30	68.85	71.76	72.70

यह देखा गया कि:

- (क) अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में समग्र अर्थों में लगभग 26% की वृद्धि हुई थी। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है।
- (ख) यद्यपि उत्पादन में लगभग 26% की वृद्धि हुई, परंतु उसके अनुपात में घरेलू बिक्री में वृद्धि नहीं हुई है।

अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग इन मानदंडों के संदर्भ में अपने कार्य निष्पादन में सुधार करने में सफल रहा है। तथापि, बिक्री मात्रा के संदर्भ में सुधार स्पष्ट रूप से अन्य मानदंडों में सुधार से कम रहा है।

स्टॉक- घरेलू उद्योग की भंडार सूची निम्नानुसार है :-

भंडार सूची (मी.टन)	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक	512	376	367	308
अंतिम स्टॉक	376	367	308	170
औसत स्टॉक	444	372	338	239
निर्यात मात्रा	298	330	347	653

यह नोट किया गया है कि क्षति अवधि के दौरान औसत भंडार सूची के स्तर में गिरावट आई है । यह जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निर्यातों की अत्यधिक उच्च मात्रा के कारण है जैसा कि अवधि के दौरान निर्यातों के स्तर से देखा जा सकता है ।

बाजार हिस्सा- भारत में विचाराधीन उत्पाद की मांग में घरेलू उद्योग और चीन का बाजार हिस्सा अवधि के दौरान निम्नानुसार था :-

% हिस्सा	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू उद्योग का हिस्सा	82.30	68.85	71.76	72.70
चीन का हिस्सा	11.24	18.80	19.41	20.40
घरेलू उद्योग द्वारा गंवाया गया हिस्सा				9.60
चीन द्वारा प्राप्त किया गया बाजार हिस्सा				9.16

यह देखा गया है कि भारत में मांग घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई और आयातों में वृद्धि हुई थी । अतः यद्यपि बिक्री में वृद्धि हुई तथापि, बिक्री मात्रा में वृद्धि, भारत में उत्पादन और मांग में वृद्धि से काफी कम थी । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग ने अपना बाजार हिस्सा चीन जन.गण. से आयातों के कारण गंवा दिया ।

लाभ- घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित किया गया लाभ निम्नानुसार है :-

सूचीबद्ध लाख रूपए में	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ (कुल लाभ)	(100)	367	(2,436)	(2,268)
कर पूर्व लाभ (प्रति इकाई लाभ)	(100)	357	(2,538)	(2,083)
ब्याज और कर पूर्व लाभ	100	119	(357)	(325)
आयातों की पहुंच कीमत रू./किग्रा.	54.89	64.11	31.12	31.32

यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से घरेलू उद्योगों को होने वाली हानि में वृद्धि होती जा रही है। यह पाया गया है कि अवधि के दौरान पीबीटी और पीबीआईटी दोनों में ही गिरावट आई है। यह देखा गया है कि लाभ की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष रूप से आयातों की पहुंच कीमत की प्रवृत्तियों से संबंधित है।

वेतन- कंपनी द्वारा भुगतान किया गया वेतन और प्रति इकाई उत्पादन पर वेतन का विस्तार निम्नानुसार है :

लाख रूपए में (सूचीबद्ध)	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
वेतन (लाख रूपए)	100	98	95	123
प्रति इकाई उत्पादन पर वेतन (रु./किग्रा.)	100	88	93	97

यह पाया गया है कि वेतन में थोड़ी वृद्धि हुई है। तथापि, प्रति इकाई उत्पादन पर वेतन लागत के विस्तार में गिरावट आई है। परंतु इसके बावजूद घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है।

रोजगार- कुल वेतन और इकाई पर मजदूरी की तुलना में संबद्ध वस्तुओं (लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट के अनुसार) के लिए वेतन और मजदूरी के अनुपात में संबद्ध वस्तुओं के लिए कर्मचारियों की संख्या का निर्धारण किया गया है जो निम्नानुसार है:-

सूचीबद्ध	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	100	68	76	83

तथापि, उत्पादन और बिक्री मात्रा में वृद्धि के कारण रोजगार में वृद्धि होनी चाहिए थी, परंतु वास्तव में रोजगार में गिरावट आई है।

निवेश पर आय- सेलोफेन पारदर्शी फिल्म पर लगाई गई पूंजी और घरेलू बिक्री पर होने वाले ब्याज पूर्व लाभ पर विचार करके निवेश पर आय का परिकलन किया गया है, जो निम्नानुसार है :-

सूचीबद्ध	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
लगाई गई पूंजी (लाख रूपए में)	100	85	91	87
ब्याज एवं करों से पूर्व लाभ (लाख रु. में)	100	119	(357)	(325)
निवेश पर आय (%)	100	140	(391)	(375)

यह देखा गया है कि यद्यपि लगाई गई पूंजी में गिरावट प्रदर्शित हुई, तथापि, ब्याज एवं कर पूर्व लाभ में अत्यधिक गिरावट आई । इसके अतिरिक्त, लगाई गई पूंजी पर आय में इस सीमा तक अत्यधिक गिरावट आई कि वह सकारात्मक की स्थिति से बदल कर ऋणात्मक हो गई ।

नकद प्रवाह पर प्रवाह- चूंकि आवेदक कंपनी एक बहु-राष्ट्रीय कंपनी है और उत्पादक से संबंधित प्रभाव भी केवल उत्पाद के लिए नहीं हैं, इसलिए नकद प्रवाह की प्रवृत्तियों का निर्धारण करने के लिए नकद लाभ को निर्धारित करना अधिक उचित समझा गया है । क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित नकद लाभ की स्थिति निम्नानुसार है :-

सूचीबद्ध (लाख रुपए में)	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ	(100)	367	(2,436)	(2,268)
नकद लाभ	100	2,547	(11,304)	(10930)

यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभों में इस सीमा तक अत्यधिक गिरावट आई है कि घरेलू उद्योग को अब नकद घाटों का सामना करना पड़ रहा है ।

उत्पादकता- जैसा कि नीचे दी गई तालिका से स्पष्ट है, संबद्ध वस्तु के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है :-

सूचीबद्ध	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादन (मी.टन)	100	163	135	152

घरेलू उद्योग की उत्पादकता में उत्पादन के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है । उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ ऊपर यथा उल्लिखित रोजगार में गिरावट के परिणामस्वरूप उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित होता है । तथापि, उत्पादकता अनुसार लाभप्रदता में गिरावट आई ।

वृद्धि- बिक्री मात्रा, उत्पादन, माल सूची तथा मांग में सकारात्मक वृद्धि हुई है । तथापि, बिक्री कीमत, बिक्री मूल्य, बाजार हिस्सा, लाभ, नकद प्रवाह, निवेश पर आय में वृद्धि ऋणात्मक रही है । बिक्री मात्रा में सकारात्मक वृद्धि के बावजूद बिक्री मूल्य में ऋणात्मक वृद्धि स्पष्ट रूप से बिक्री कीमत में अत्यधिक कमी का परिणाम है जिसका घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय पर

प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । इसके अतिरिक्त, यद्यपि उत्पादन तथा बिक्री मात्रा में सकारात्मक वृद्धि हुई थी, तथापि वह मांग में वृद्धि से बहुत कम थी ।

नई पूंजी उगाहने/पूंजी निवेश की क्षमता- कंपनी को वित्तीय घाटों का सामना करना पड़ रहा है और उसने उत्पाद में कोई नया निवेश नहीं किया है । आवेदक ने दावा किया कि उन्हें निवेश करने में कोई कठिनाई नहीं होगी ।

उपर्युक्त तथा रिकॉर्ड में साक्ष्य पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है ।

#### कारणात्मक संबंध:

27. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के संबंध में निष्कर्ष निकालने के लिए और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुरूप और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (V) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उसके उस उद्योग की स्थिति पर प्रभाव की जांच की । पाटित आयात, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो सकती थी, से इतर ज्ञात कारकों की जांच यह सुनिश्चित करने के लिए की गई थी कि इन अन्य कारकों से हुई संभव क्षति को पाटित आयातों के कारण नहीं माना गया था ।

#### पाटित आयातों के प्रभाव

- (i) पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि का परिणाम घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट के रूप में हुआ है । संबद्ध देशों से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट से घरेलू उद्योग बाजार में मांग में वृद्धि के साथ-साथ अपनी बिक्रियां बढ़ाने से वंचित रह गया है ।
- (ii) अत्यधिक कीमत कटौती से घरेलू उद्योग अपनी कीमतों को उचित स्तर तक बढ़ाने से वंचित रहा । इसके विपरीत, घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में अत्यधिक गिरावट आई ।
- (iii) मांग में वृद्धि के बावजूद बाजार हिस्से में गिरावट का परिणाम उत्पादन मात्राओं में वृद्धि से बहुत कम बिक्री मात्राओं में वृद्धि के रूप में हुआ । इसके अतिरिक्त, उत्पादन मात्राओं में वृद्धि मांग में वृद्धि से बहुत कम

थी । अतः पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को अपने उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि करने में बाधा आई ।

#### अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन-

देश में संबद्ध वस्तु का कोई और उत्पादक नहीं है । याचिकाकर्ता देश में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है ।

#### मांग में कमी अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन-

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई कमी नहीं आई थी । इसके विपरीत, क्षति अवधि के दौरान समग्र मांग में काफी वृद्धि हुई है । प्राधिकारी यह भी निष्कर्ष निकालते हैं कि उपभोग के पैटर्न में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन या मांग में कमी नहीं हुई थी जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई होती ।

#### पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमत-

उपलब्ध सूचना के अनुसार अन्य देशों से आयात कीमतें उस कीमत से बहुत अधिक हैं जिन पर चीन से वस्तुओं का आयात किया जाता है । अन्य देशों से आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई हो सकती है ।

#### विदेशी उत्पादकों की व्यापार बाध्यकारी प्रथाएं तथा विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा-

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु एक आम बाजार है जहां संबद्ध देश से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं । इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री उसी अपेक्षा को पूरी करने के लिए जिसके लिए घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु की बिक्री की जाती है । इसके अतिरिक्त, यह नोट किया गया है कि आयातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं और उनका प्रयोग एक ही प्रकार के कार्यों एवं प्रयोगों के लिए किया जाता है ।

### घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता, प्रौद्योगिकी विकास-

याचिकाकर्ता के रिकॉर्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि प्रौद्योगिकी का विकास घरेलू उद्योग को क्षति के लिए संगत कारक नहीं है ।

घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निर्यात में सुधार हुआ है ।

उत्पादकता की प्रवृत्ति के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान प्रति वर्ष नियुक्त प्रति व्यक्ति उत्पादकता के रूप में मापी गई उत्पादकता में क्षति अवधि के दौरान सुधार हुआ है । जांच के आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि उत्पादकता में स्वतः संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं है ।

उपर्युक्त तथा रिकॉर्ड में साक्ष्य पर विचार करने के बाद प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है ।

### **भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे:**

28. प्राधिकारी मानते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले पाटन को समाप्त करना और भारतीय बाजार में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित करना है जो कि देश के आम हित में है । प्राधिकारी यह भी स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पादों की का कीमत स्तर प्रभावित होगा और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्धात्मकता प्रभावित होगी । तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं होगी । इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों के अधिरोपण से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी । प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से चीन जन.गण. से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए वे उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेंगे ।

### **निष्कर्ष:**

29. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

(क) चीन के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु भारत को सामान्य से कम मूल्य पर निर्यात की गई है जिसका परिणाम पाटन के रूप में हुआ है ।



- (ख) घरेलू उद्योग की आर्थिक क्षति हुई है ।
- (ग) चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के आयात के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है ।
- (घ) चीन जन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयात पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक माना गया है ।
- (ङ) पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने पर विचार किया गया है ताकि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण हुई क्षति को समाप्त किया जा सके । तदनुसार यह प्रस्ताव किया गया है कि केन्द्र सरकार द्वारा संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में दी गई राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

क्र. सं.	उपशीर्ष	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	3920 4806	सेलोफेन ट्रांसपेरेंट फिल्म (ट्रांसपेरेंट पेपर के रूप में भी ज्ञात)	सभी ग्रेड या विनिर्देशन	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	1.91	किग्रा.	अम. डॉलर
2	3920 4806	-वही-	-वही-	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	1.91	किग्रा.	अम. डॉलर

- (च) उपरोक्त के अध्यक्षीन प्राधिकारी दिनांक 3 फरवरी, 2006 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं ।
- (छ) नियमावली के अनुसार इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क, एवं सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जा सकती है ।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
**(Department of Commerce)**  
**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**  
**NOTIFICATION**

New Delhi, the 28th July, 2006

**FINAL FINDINGS**

**Subject : Anti-dumping Investigation concerning Imports of Cellophane Transparent Film  
(CTF) originating in or exported from China PR—Final Findings.**

**No. 14/7/2005-DGAD.—PROCEDURE :**

1. The procedure described below has been followed:

(i) On 27<sup>th</sup> September 2005, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, announced through a public notice (initiation notification) in the Gazette of India, the initiation of an anti dumping investigation with regard to imports of Cellophane Transparent Film (hereinafter referred to as CTF or subject goods) originating in or exported from China PR, (hereinafter referred as subject country). The anti dumping proceeding was initiated following an application received from M/s. Kesoram Rayon, unit of M/s. Kesoram Industries, Kolkatta, (hereinafter referred as applicant) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The application contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) Before initiation, the Authority notified the Embassy of China PR in India about the receipt of fully documented application made by the applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded a copy of the said public notice to the known exporting producers, importers, industry associations, embassy of the country concerned and to the applicant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known producers/exporters and Embassy of China PR in India. According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassy of China PR in India and other interested parties. The Embassy of China PR were also requested to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known producers/exporters from China PR.

1. ShangYu Cellophane Co. Ltd. ,Dasanjiao Development Zone,  
ShangYu City, Zhejiang Province,China. ZIP-312300
2. Yuyao Paper Mill,No. 328 Jiang-Yuan Street,  
Yuyao City, Zhejiang, China – ZIP 315400
3. Weifang Henglian Cellophane Co. Ltd.,409, Wolong East  
Street,  
Weifang, Shandong, China – ZIP 261031

(vi) In response to the above notification none of the exporter has responded to the questionnaire.

(vii) A copy of initiation notification along with the importers questionnaire were also sent to the various importers which were listed in the application with an advise to provide relevant information to the Authority and make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2). M/s. Gulshan Rai Jain & Sons and M/s. Mukesh Paper Mart filed their submissions in response to the initiation notification alongwith the information in prescribed format. M/s. Jyoti Coaters Pvt. Ltd. also made some arguments but have not provided information in prescribed format.

(viii) The Authority notified Preliminary findings vide its Notification dated the 3rd February, 2006 and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication. M/s. Gulshan Rai Jain & Sons and M/s. Mukesh Paper Mart submitted their comments.

(ix) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties through a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(x) The Authority held a public hearing on 23rd March 2006 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally, which was attended by representatives of the Domestic Industry and other interested parties. The parties attending the public hearing were advised to file written submissions of views and information presented orally. The interested parties were allowed to present rebuttal arguments on the views/information presented orally by other interested parties. Designated Authority has considered in this finding the written submissions received from various interested parties. Arguments raised by interested parties before announcing of preliminary findings, which have been brought out in the Preliminary Findings notified earlier have not been repeated herein for sake of brevity. The Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry to the extent considered necessary. Additional details regarding injury were sought from the applicant, which were also received.

- (xi) \*\*\*\* in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have been considered below. The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April 2004 to 31st March 2005 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2001 annually to the end of period of investigation. (also called Injury period).
- (xii) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of determination of dumping and resultant injury. The Authority during the course of investigation satisfied itself as to the accuracy of the information supplied by various interested parties upon which these findings are based. For the purpose, the Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the best cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.
- (xiii) The Authority provided opportunity to the users of the product under consideration, and to the known representative organisations, to furnish information considered relevant to the investigation regarding dumping, injury and causality. Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.
- (xiv) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided, necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.
- (xv) Information provided by various interested parties on confidential basis were examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted, and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide non confidential version of the information filed on confidential basis.

#### PRODUCT UNDER CONSIDERATION.

2. The product under consideration is Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper originating in or exported from People's Republic of China. Transparent Film is a re-generated cellulose film of glass clear transparency and sparkle. It is flexible, yet tough and withstands all the beatings in an automatic

packaging operation and shows outstanding machineability as well as dimensional stability. It is made of wood pulp, hence it is non-toxic and biodegradable. TP films can be coloured or white. Transparent Film is available in sheet and Roll forms. Presently various types of TP Films having many Grades are produced. It is an ideal packaging material.

TP Films are classified under Chapter 39, subheading 392071 of the Customs Tariff Act in the category of Plastics and Articles thereof. However Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of investigation.

3. Petitioner claimed that the product has been reported under varying descriptions and customs classification. Petitioner claimed that this was a deliberate act on the part of the importers to ignore dedicated customs classification and use irrelevant customs classification. Petitioner has requested the Designated Authority to investigate this aspect in detail. They have also requested this aspect to be brought very clearly in the conclusions and duty table to prevent any possible circumvention in due course. The petitioner also alleged that it was quite a strange coincidence that the price at which the product under consideration is being imported under two different customs classifications also significantly varies.

4. On examination, the Authority notes that in fact a large number of imports do not contain the classification meant for the product under consideration and the goods have been imported under customs classification different from what is applicable for the product under consideration. The description of Cellulose film as classified under Chapter 39 of the Customs Tariff Act is quite unambiguous and leaves no scope for any doubt that the product under consideration falls under 392071 only. However, goods have been imported in huge volumes under customs classification 48064090.

5. The responding importers argued at the time of hearing that CTF of less than 30 gms per sqm(GSM) is not produced by the domestic industry. However, in the written submissions, they modified to argue that CTF of less than 25 gms per sqm is not produced by the domestic industry. Information available on the web site of the petitioner company was also relied upon. It was further argued that CTF upto 25 gms/sqm is an entirely different product than CTF above 25 gms/sqm. Relying upon the list of customers for the imported CTF, the importers argued that none of these users are customers for the indigenous CTF. It was further argued that CTF of less than and above 25 gms/sqm are not technically and commercially substitutable and if CTF becomes expensive, the users will shift to other alternate substitutes. However, no evidence was provided to substantiate that CTF below and above 25 gms/sqm are different products.

6. The domestic industry contended at the time of hearing that majority of the production by the domestic industry constituted CTF below 30 gms/sqm. A statement showing GSM wise production over the investigation period was also provided. Domestic industry provided the details of their production during POI in terms of GSM of the output month wise duly certified by Cost Accountant. The production process of the applicant and parameters leading to production of CTF with desired GSM was examined in detail. Production records of the petitioner

company showing production of different GSM CTF was also examined. It is noted that production of CTF with different GSM is achieved at the stage of regeneration by passing viscose of required dosing through two lips of casting head. In terms of production facilities, it was observed that the same production facilities are employed for production of CTF with different GSM. Only the casting heads and dosing of viscose are required to be controlled in order to achieve production of desired GSM CTF.

7. In response to the arguments of the importers, the domestic industry argued that (a) the arguments on these accounts were mere statements, unsubstantiated with an evidence; (b) the importers kept switching their arguments; (c) production of different GSM is a matter of control over production process; (d) majority of the production of the domestic industry is 25 GSM; (e) GSM of the imported product is not established, nor GSM is mentioned on the invoices either by the domestic industry or by the Chinese producers; (f) lower the GSM, higher the associated cost of production, whereas the allegation of the domestic industry has been against significantly lower prices of imported product, which rather gets amplified by the allegation of lower GSM grade imports; (g) the importers have interchangeably argued lower GSM of imported product, inferior quality of imported product and imports of stock-lot.

8. In their comments on disclosure statement, the responding importers reiterated that the product under consideration should be restricted to plain/uncoated cellophane transparent film from 25 GSM – 40 GSM. The responding importers reiterated their claim that:

- a) The imported products were of inferior quality
- b) Only Grade III material were imported from China
- c) Imported product is different from what is produced by the domestic industry.

9. Authority examined these contentions in detail during the course of the investigations. The Authority holds that mere difference in quality does not render the imported product different than what is produced and sold by the domestic industry. The Authority holds, having regard to submissions made by various interested parties, evidence on record and verification conducted at the petitioner's premises, that production of GSM is only a matter of control over the production process and can be achieved by controlling the process parameters and flow of viscose. It is also noted that the interested parties have not been able to establish that CTF above and below 25 GSM are different products.

10. As regards information available on the web site of petitioner company, the Authority notes that the petitioner confirmed not having updated its web site for a long period. In any event, verified evidence in the form of records maintained by the company establishes that the information posted on the web site is not factually correct.

Accordingly, the Authority confirms the scope of the product under consideration stated in the preliminary findings, i.e., the product under consideration is

Cellophane Transparent Film also known as Transparent Paper originating in or exported from People's Republic of China.

#### LIKE ARTICLE.

11. With regards to like article, the Authority notes that Rule 2(d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject country, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority in the preliminary findings. On basis of the examination, it was noted in the preliminary findings that subject goods produced by domestic industry has characteristics similar to those imported from subject countries.

12. The responding importers claimed that (a) the goods imported by them are of inferior quality, (b) represented a product different than what is sold by domestic industry and (c) various grades of CTF differ significantly with regard to a number of parameters, including degree of commercial substitutability, ability to be used for mechanical packing & other operations, utility/end user of the goods, pricing and quality, customer and producer perception, channels of distribution in market segment etc. It was contended that the domestic industry has not categorically addressed the issue of viable substitute for the product, nor provided information about the substitutes and their degree of substitution. It was also argued that existence of different grades implied that the consumers could not have switched over from one type to other type. Had the various types been interchangeable, the consumers would have substituted expensive grade with cheaper grades. It is also the argument of the importer that the imported product cannot be used for mechanized packaging operations. The Authority however noted that the responding importers provided no technical or material evidence in support of their arguments.

13. The applicants claimed that goods produced by them are like articles to the goods originating in or exported from subject country, there is no significant difference in the subject goods produced by the applicants and those exported from subject country and the mere difference in quality does not render the imported and domestic product different. Petitioner either directly or through its dealers competes with these traders/resellers for the same general category of consumers. Significant volume of sales by the petitioner company is through resellers.

14. The Authority examined various contentions of the interested parties. The Authority considers that mere difference in quality or the fact that imported product is a stock lot does not render a domestic product different from the imported product. The product still remains Cellophane Transparent Film, as the product contains essentially the same basic physical and chemical characteristics, is produced from the same raw materials, using the same technology, manufacturing process, and is used for the similar functions & uses. Such being the case, it can not be said that mere difference in quality renders the product imported by the

importers as different from "Cellophane Transparent Film" also described as "Transparent Paper", the product under consideration. It is also noted that the difference in quality is not a conscious business decision of any producer. The product is classified after production into different grades based on perceptible quality differences in the product. However, the associated cost of production of different grades remains the same.

In view of the above the Authority holds that CTF produced by the domestic industry is like article to CTF imported from the subject country within the meaning of the Rules.

## DOMESTIC INDUSTRY

15. The application has been filed by Kesoram Rayon (the applicant) who is the sole producer of the like article. The applicant has provided information relevant to the present investigations and has participated in the present investigations. It is the sole producer of the product under consideration. The Authority after examining determined that the applicant constituted domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) and it satisfied the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3)(a) of the Rules supra.

The Authority notes that even though there are arguments for exclusion of some types of product under consideration, or on domestic product being different from the imported product, or that the product under consideration is a small proportion in applicant's total business, there is no dispute that the applicant was the sole producer of the product concerned in India. As stated before, the applicant produces goods which are like article to the imported product. The Authority therefore confirms the preliminary findings regarding standing of the applicant to file the application for initiation of anti-dumping investigation and holds that the applicant constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

## DUMPING

### Normal Value:

16. In terms of para 7 & 8 of Annexure I of A D Rules, applicant claimed that Chinese producers should be treated as non market economy and no country has granted market economy country status to China after following detailed evaluation procedure, examination and evaluation as mentioned in the Rules. Petitioner also proposed consideration of import price from UK to India an appropriate benchmark for determination of normal value. The responding importers objected to consideration of UK prices as an appropriate bench mark on the grounds that (a) prices are higher in UK; (b) prices in UK differ significantly as per the data given in the petition itself (c) Indonesia, Thailand, Malaysia are more appropriate surrogate country (as cost of production is low in these countries). In response domestic industry pointed out that existence of possible higher prices in UK is not a



US have been treated as an appropriate surrogate country for the Chinese producers by other investigating authorities.

17. The Authority notes that the claim of the responding importers that China should be given market economy treatment (MET) cannot be considered on the grounds that such MET can only be granted after the claimant establishes compliance with the parameters listed in para 8 of Annexure 1 of AD Rules. The Rules provides that a party can only claim market economy status on the basis of verifiable positive evidence. The Authority has in fact granted such status to Chinese companies in the past. Such a claim is required to be made by, or on their behalf, the concerned Chinese producers. However, no such claim has been made by any Chinese producer. The responding importers also have provided no information and evidence to establish compliance with the laid down criteria. The Authority can not therefore grant market economy status to any producer of subject goods in China in terms of Para 8 of Annexure I to the Rules.

18. Petitioner supplemented its claim of normal value based on import price from UK with the estimates of cost of production in India, duly adjusted to include selling, general and administrative expenses and reasonable profit. The estimate of cost of production was after adjusting the input prices for the customs duties in India. While disputing the claim of the domestic industry to treat Chinese producers as non market economy, the interested parties have not advanced any evidence either with regard to price or constructed value in a market economy third country. Under the circumstances, the Authority has determined that only option available for the purpose of final findings is to determine normal value considering price payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin. Price actually paid in India has not been considered for the reason that the same were depressed due to dumping. Thus, the Authority has constructed the normal value by taking into account cost of production in India, duly adjusted, to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit. The normal value is thus determined as Rs. \*\*\* per Kg.

Authority also notes that since none of the exporters/producers in China have responded to the Authority, individual dumping margin for different exporters can not be determined. The Authority has therefore determined one dumping margin for all Chinese producers.

#### Export price

19. Petitioner determined export price based on transaction wise data provided by the DGCI&S and IBIS. Petitioner had claimed that the transaction wise data provided by DGCI&S does not include all imports reported in India, as the imports have been reported in a number of customs classifications, that is, 39207111, 39207119, 39207129, 39209929 and 48064090. Information filed by the responding importers confirmed that huge volumes have been imported under Chapter 4806. As the importer have enclosed copies of bills of entries evidencing import of item under chapter 4806, the Authority considers that these imports are

23/06/06-4

required to be included within the scope of the product under consideration. It is also noted that none of the Chinese exporters have responded to the Authority even after the preliminary findings.

The average import price comes to Rs 25.84 per kg ( US \$ 0.57 per kg). After considering price adjustments on account of inland freight, marine insurance, commission, ocean freight, bank charges and port charges, the ex factory export price comes to Rs \*\*\*per kg ( US \$ \*\*\* per kg).

#### Dumping Margin:

20. The Authority notes that the comparison between normal value and export price must be fair comparison. Authority has therefore determined both the normal value and export price at ex factory level. Both pertain to the same period. Both the prices are free of taxes. Thus the Authority considers that the comparison made is a fair comparison. Considering the normal value and export price determined as above, dumping margin has been determined, which comes to Rs \*\*\* per kg (US \$ \*\*\* per kg.) which works out as 380% of net export price.

#### INJURY AND CAUSAL LINK

##### 21. Arguments by the domestic industry

- a) The product is being dumped for a long period and in fact throughout the injury period.
- b) Import volume have shown an increasing trend and have remained quite significant and have increased in absolute terms, relative to production & consumption in India. Market share of the Chinese imports increased at the cost of market share of the domestic industry.
- c) Dumped imports were significantly undercutting the domestic prices. As a direct consequence, the domestic industry was forced to reduce the selling prices and yet lost market share. The imports were depressing the prices of the domestic industry.
- d) Production, sales and capacity utilisation increased, inspite of which, the profit position deteriorated thus clearly showing adverse effect on account of dumping. The capacity utilisation of the domestic industry was below optimum levels.
- e) Profits declined even when cost of production declined. Consequently, cash profits and return on investment declined. Cash profits and return on investment declined from positive to negative. Decline in profits was in spite of decline in conversion costs. Profit before interest, depreciation & taxes and profit before interest & taxes, which were positive in 2000-01 and 2001-02 became negative from 2003-04 onwards
- f) Decline in inventories was due to exports, which were undertaken in view of piling up of inventories due to sluggish sales.

- g) Number of employees shows a deterioration. While total wages paid increased, wage cost per unit of production has not increased. Whereas productivity improved, profitability deteriorated.
- h) Growth was positive in terms of sales volumes, production and demand and negative in terms of selling prices, sales values, market share, profits, cash flow, ROI.
- i) Causal link is established by the followings:-
  - i) Persistent price undercutting forced domestic industry to reduce prices.
  - ii) Deterioration in profits, cash flow and return on investments is due to reduction in prices.
  - iii) Whereas market share of the dumped imports increased, that of domestic industry declined.
  - iv) Decline in market share prevented the domestic industry from increasing its capacity utilisation and consequently production.

Arguments of the other interested parties

22. Responding importers have disputed that the domestic industry has suffered material injury. Arguments advanced by the importers and views of the Authority thereon are given below:-

- (i) The domestic industry is suffering injury from alternate products. It is claimed that demand for the subject goods has been going down over the last several decades. There are several substitute which have emerged as packaging paper. In support of its contention, the importer has referred to a publication from "Free Donia Group" published in February 2004, which states that Cellophane Film will continue its volume declines because of competition from oriented polypropylene.
- (ii) The responding importer has claimed that Cellophane Film is a dying item and the worldwide production and demand is going down. The importer has also referred to Global Industry Report provided by the petitioner in this regard.
- (iii) Importers have claimed that the goods being imported from China are of sub-standard quality and could not have caused injury to the domestic industry and different quality grades are not interchangeable.
- (iv) In their comments to disclosure statement, the responding importers submitted as follows:-
  - a) The statistical information given by the petitioner was highly misleading and pertain to entire group for a multi product company.

- b) Decline in market share is irrelevant particularly when production, capacity utilisation, domestic sales and export sales have increased.
- c) The plant of the petitioner company was under a lock out for more than five months.

#### Examination by Authority

23. The views expressed by the responding importers were examined by the Authority and the same are discussed below.

With regard to production suspension by applicant, the Authority notes that the petitioner has confirmed recommencement of production and has pleaded that the plant was shut down for the reasons beyond their control.

With regard to quality issues, the Authority notes that the difference in quality does not imply that the domestic product is not a like article to the imported product. Moreover, as noted below, the performance of the domestic industry materially deteriorated. Even if it is assumed that the imported product is of poor quality, it is evident that the domestic industry has suffered material injury as a result of dumped imports in the market.

With regard to viable substitutes, Authority notes that the competition from alternate products is not a new phenomena in the industry. It is mentioned in the Annual Reports of the applicant that the alternate products have been competing with the product under consideration for past several decades. It is, however, noted that the performance of the domestic industry in the past was good in spite of such competition from alternate products. The performance materially deteriorated over the injury period, with the increase in dumped imports and consequent significant price undercutting caused by such dumped imports.

The Authority considers that the Report stating that the product is dying is not relevant to the facts of the present case. The Report shows a significant decline in the world demand, whereas the demand in India has shown an increase over the injury period. Further, the applicant had been making profits in the past and is now faced with significant financial losses, which coincides with the increase in imports and significant price undercutting. Even if it is assumed that the product is a dying product in the world market, demand of the product is rising in the Indian market. Lack of demand does not appear to be the major reason for deterioration in performance of the domestic industry.

#### Import volumes and market share

24. The volume of dumped imports, and their share in imports from various countries and production & consumption in India are given in the table below:

Import Volumes (MT)	2001-02	2002-03	2003-04	POI
From China	243	501	463	545
Total Imports	383	830	673	729
Share of China in Imports %	63.47	60.35	68.72	74.73
Demand/ Consumption (MT)	2166	2663	2384	2670
Share of China in Demand in India %	11.24	18.80	19.41	20.40
Production(MT)	1945	2156	2000	2456
Imports from China in relation to domestic production( %)	12.49	23.22	23.14	22.18

The Authority notes that

- imports from China PR increased over the period in absolute terms and also in relation to imports into India, production in India and consumption in India.
- imports from China PR increased from 63% to 75% over the injury period in relation to total imports of the product under consideration in India.
- Imports from China PR in relation to production in India increased from 12% (2001-02) to 22% (2004-05).
- Imports from China PR in relation to demand also increased from 11% to 20% over the injury period.

The Authority concludes that the imports of the product under consideration from China PR increased in absolute terms as also in relation to production and consumption in India.

#### Price effect of imports

25. Net sales realization of the domestic industry has been arrived at by considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The trend of various prices is as given in the table below:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
CIF export price	Rs./KG	41.80	48.83	24.65	25.84
Landed price of imports	Rs./KG	54.89	64.11	31.12	31.32
Sales Realisation (indexed)	Index	100	98	81	82
Price undercutting (indexed)	Index	100	138	162	165
Cost of production (indexed)	Index	100	95	97	96

23/06/06-5

From the above it is observed that:

- a) CIF export price into India from China has declined significantly.
- b) As a result of decline in CIF import price, landed price of imports from China PR also declined significantly.
- c) Landed prices of imports from China have been significantly below the net sales realization of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.
- d) Imports are depressing the prices of the domestic industry in the market.

The Authority concludes that the imports of the product under consideration from China PR have caused significant price undercutting and have depressed the prices of the domestic industry in the market.

#### Economic Parameters relating to the domestic industry

26. Annexure II to the Anti dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

Production, sales volumes, capacity and capacity utilization - Status of the domestic industry with regard to production, sales volumes, capacity and capacity utilization showed as under:-

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Capacity (MT)	3600	3600	3600	3600
Production (MT)	1945	2156	2000	2456
Plant utilisation (%)	54.04	59.89	55.55	68.22
Domestic Sales (MT)	1783	1833	1711	1941
Export Sales (MT)	298	330	347	653
Demand (MT)	2166	2663	2384	2670
Market share in Demand (%)	82.30	68.85	71.76	72.70

It is seen that:

- a) Production of the domestic industry increased in absolute terms by about 26% over the period. As a direct consequence, capacity utilization increased.
- b) Though production increased by about 26%, domestic sales did not increase proportionately. In fact, increase in sales volumes was only about 9%.

The Authority thus concludes that even though the domestic industry has been able to improve its performance in terms of these parameters, improvement in terms of sales volumes has been clearly quite below the improvements in other parameters.

**Stocks** - The inventories with the domestic industry have been as shown below:-

Inventories (MT)	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Opening Stock	512	376	367	308
Closing Stock	376	367	308	170
Average Stock	444	372	338	239
Export volumes	298	330	347	653

It is noted that level of average inventories has reduced during the injury period. This is due to significantly higher volume of exports made by the domestic industry during the investigation period, as may be seen from the level of exports during the period.

**Market share** - Market share of the domestic industry and China in demand of the product under consideration in India was as under over the period:-

% Share	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Share of domestic industry	82.30	68.85	71.76	72.70
Share of China	11.24	18.80	19.41	20.40
Market share lost by domestic industry				9.60
Market share gained by China				9.16

It is seen that the market share of the domestic industry in demand in India declined and that of imports increased. Thus, even when sales grew, the increase in sales volumes was far less than increase in production and demand in India. Resultantly, the domestic industry lost market share to imports from China PR.

**Profits** - Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market are as follows:-

Indexed Rs. In Lacs	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Profit before tax (Total profit)	(100)	367	(2,436)	(2,268)
Profit before tax (Profit per unit)	(100)	357	(2,538)	(2,083)

Profit before interest & taxes	100	119	(357)	(325)
Landed price of imports Rs./kg.	54.89	64.11	31.12	31.32

It is seen that the losses of the domestic industry for the subject goods have been increasing significantly over the injury period. It is found that both PBT and PBIT have deteriorated over the period. It is seen that the trends in profits directly correlate with the trends in landed price of imports.

Wages - Wages paid by the company and incidence of wage per unit of production has been as under:

Rs. In Lacs (Indexed )	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Wages (Rs. Lacs)	100	98	95	123
Wages per unit of production (Rs./kg)	100	88	93	97

It is found that wages have shown some increase. However, incidence of wage cost per unit of production has declined, in spite of which the profits of the domestic industry have deteriorated.

Employment - The number of employees for the subject goods has been arrived in the ratio of salary and wages for the subject goods (as per the cost audit report) as compared to total salary and wages of the unit and the same is as under:-

Indexed	2001-02	2002-03	2003-04	POI
No. of employee	100	68	76	83

Whereas employment should have increased, given increase in production and sales volumes, employment has in fact declined.

Return on investment - Return on investment has been calculated by considering capital employed on cellophane transparent film and profit before interest on domestic sales, which is as under:-

Indexed	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Capital employed (Rs. In Lacs)	100	85	91	87
Profit before interest & taxes (Rs. In Lacs)	100	119	(357)	(325)
Return on investment (%)	100	140	(391)	(375)

It is seen that whereas the capital employed showed decline, profit before interest & taxes declined very significantly. Further, return on capital employed declined very significantly to such an extent that the same became negative from a situation of positive.



Effect on Cash flow - Since the applicant company is a multi product company and even the division relating to the product is not dedicated to the product alone, it is considered more appropriate to determine cash profits in order to determine trends in cash flow. Status of cash profits earned by the domestic industry over the injury period have been as under:-

Indexed (Rs. In Lacs)	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Profit before taxes	(100)	367	(2,436)	(2,268)
Cash profits	100	2,547	(11,304)	(10930)

It is seen that the cash profits of the domestic industry have declined significantly over the injury period to such an extent that the domestic industry is now faced with cash losses.

Productivity - Productivity of the domestic industry for subject good has increased, as is evident from the table below:-

Indexed	2001-02	2002-03	2003-04	POI
production per employee (MT)	100	163	135	152

Productivity of the domestic industry shows same trend as that of production. Productivity shows improvement as a result of increase in production coupled with fall in employment as mentioned above. However, in spite of significant increase in productivity, the profitability declined as per data given above.

Growth - There is positive growth in sales volumes, production, inventories, and demand. However, growth in selling prices, sales values, market share, profits, cash flow, ROI has been negative. Negative growth in sales values despite positive growth in sales volumes is a clear result of significant reduction in selling prices, which adversely affected profits, cash flow and ROI of the domestic industry. Further, even though production and sales volumes had positive growth, the same was far less than growth in demand.

Ability to raise fresh/ capital investments - The company is suffering financial losses and has not made any fresh investments in the product. Applicant claimed that it would be difficult for them to raise investments.

After considering the above and evidence on record, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

#### CAUSAL LINK

27. In order to reach conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II of AD Rules, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

Effect of dumped imports

(i) Significant increase in the volume of dumped imports has resulted in significant decline in market share of the domestic industry. Decline in market share of the domestic industry as a consequence of increase in the market share of the dumped imports from subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate with the increase in the demand in the market.

(ii) Significant price undercutting prevented the domestic industry from increasing its prices to a fair level. On the contrary, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated significantly.

(iii) Decline in market share in spite of increase in demand resulted in increase in sales volumes far lower than the increase in production volumes. Further, the increase in production volumes was far lower than the increase in demand. Thus, dumped imports prevented the domestic industry from increasing its production, sales & capacity utilisation.

Performance of Other Domestic producers: There are no other producers of the subject good in the Country. Petitioner is the sole producer of the subject good in India.

Contraction in demand or Changes in the pattern of consumption: The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased significantly during the injury period. The Authority also concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption or contraction in demand that could have caused injury to the domestic industry.

Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices: According to the available information, import prices from other countries are at prices significantly higher than the prices at which goods were being imported from China. Imports from other countries could not have caused injury to the domestic industry.

Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers: The Authority notes that there is a common market for the subject goods where dumped imports from the subject country compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The Authority further notes that the imported product is sold to meet the similar requirement as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar functions & uses.

Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry: On the basis of the examination of the records of the petitioner, the Authority holds that developments in technology does not appear to be a relevant factor for injury to the domestic industry.

With regard to the export performance of the domestic industry, the Authority notes that there has been improvement in the exports of the domestic industry during the period under consideration.

As regards trends in productivity, the Authority notes that during the period under consideration, the productivity measured as output per person employed per year has rather improved during the injury period. On the basis of the examination, the Authority holds that possible deterioration in productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

After considering the above and evidence on record, the Authority concludes that material injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

#### INTEREST OF INDIAN INDUSTRY AND OTHER ISSUES

28. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority also recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from China PR in any way, and, therefore would not affect the availability of the product to the consumers.

#### CONCLUSION

29. After considering the foregoing, the Authority concludes that:

- a) The subject goods originating in or exported from China have been exported to India below its normal value, resulting in dumping.
- b) The domestic industry has suffered material injury.
- c) Injury to the domestic industry has been caused by imports of subject goods from China PR.
- d) It is considered necessary to impose definitive anti-dumping duty on imports of subject goods originating in or exported from China PR.
- e) It is considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or lower so as to remove the injury to the domestic industry accrued on account of dumping. Accordingly, it is proposed that definitive anti-dumping duties equal to the amount indicated in column 9 of the table below be imposed by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from subject country.

Sl. No	Sub-headin g	Description of goods	Specific ation	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurem ent	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	3920 or 4806	Cellophane Transparent Film (also known as Cellophane Transparent Paper)	All grades or specifications	China PR	Any	Any	Any	1.91	Kgs.	US \$
2	3920 or 4806	- do -	- do -	Any	China PR	Any	Any	1.91	Kgs.	US \$

- f) Subject to above, the Authority confirms the preliminary findings dated 3<sup>rd</sup> Feb., 2006.
- g) An appeal against this order shall lie to the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Act supra.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority